मध्य प्रदेश के बौद्व कालीन स्थलों का ऐतिहासिक महत्व

Mubeen Khan
M.G.C.G.V.V.Chitrakoot Satna (M.P.)

Abstract-

प्रस्तुत शोध पत्र मे मेरे द्वारा मध्य प्रदेश के बौद्व कालीन स्थलों की ऐतिहासिकता का वर्णन किया गया है। मध्य प्रदेश मे बौद्व धर्म के प्रारम्भ एवं पतन आदि का उल्लेख किया गया है। महात्मा गौतम बुद्व के समय मध्य प्रदेश तथा उनके अनुयायियों के द्वारा बौद्व धर्म के प्रसार का वर्णन मेरे द्वारा प्रस्तुत किया गया है जिसके द्वारा प्राचीन भारत की सामाजिक, आर्थिक,धार्मिक तथा राजनीतिक गतिविधियों को मेरे द्वारा प्रस्तुत शोध पत्र मे बताया जा सकेगा।

Keywords - मध्य प्रदेश,ऐतिहासिकता, बौद्व कालीन।

अवन्ती मालवा (म0प्र0)

अवन्ती की राजधानी उज्जयिनी थी। अशोक के प्रथम शिलालेख में उज्जयिनी का उल्लेख है जहां से कुमार महामात्रों को भेजता था अशोक के अभिलेख में भेज एवं ऋष्टिक–राष्ट्रिक क्षेत्र और उनकी प्रशाखएं अवन्ती नामक तत्कालीन मौर्य प्रान्त की क्षेत्रीय सीमाओं के बाहर स्थिति बतलाई गई थी। टी0 डब्ल्यू0 रीज रेविड्स का मत है कि दूसरी शताब्दी ई0 तक इसे अवन्ती कहा जाता था किन्तु सातवीं या आठवीं शताब्दी ई0 के पश्चात् इसे मालव कहा जाने लगा उज्जयिनी जो अवन्ती या पश्चिमी मालव की राजधानी थी एवं जो चर्मण्यती (चंबल) की सहायक शिप्रा नदी के तट पर स्थित थी, मध्य प्रदेश में आधुनिक उज्जैन है। यह दो भागों में विभक्त थी उत्तरी भाग जिसकी राजधानी उज्जयिनी थी एवं दक्षिणी भाग जिसकी राजधानी महिस्सती या महिष्मती थी।

अवन्तीजन प्राचीन भारत के एक अत्यन्त शक्तिशाली क्षत्रिय कबीले थे। जो प्राचीन जन थे। उन्होंने विन्ध्य पर्वत के उत्तर में स्थित क्षेत्रों को अधिकृत किया था। बौद्ध धर्म के उत्कर्ष–काल में वे भारत के चार प्रमुख जनपदों में से एक थे, जो कालान्तर में मौर्य साम्राज्य में विलयित हो गये थे यह एक रोचक तथ्य है कि अधिकाशं बर्बर भूमिवाले अवन्ती प्रदेश के सिन्ध नदी से आगे आने वाले प्राचीन आर्यजनों ने उपनिवेशित या विजित कर लिया था वे कच्छ की खाडी से पूरब की ओर मुड गए थे। कम से कम दूसरी शताब्दी ई0 तक उसे अवन्ती कहा जाता था जैसा कि हमें रूद्रदासन के जूनागढ़ अभिलेख से विदित होता है किन्तु टी0डब्ल्यू0 रीज डेविड्स के मतानुसार सातवीं या आठवीं शताब्दी ई0 के पश्चात् इसे मालवा कहा जाने लगा कुछ लोगों के अनुसार पालि भाषा, जिसमें थेरवादी बौद्ध के ग्रन्थ लिखे गए हैं, अवन्ती या गंधार में ही विकसित हुए थे

उज्जैन अथवा उज्जयिनी (अवंती, म0प्र0)

अवन्ती या पश्चिमी मालवा की राजधानी उज्जयिनी (उज्जैनी) चर्मण्वती (चम्बल) की एक सहायक नदी शिप्रा के तट पर स्थित थी। यह मध्य प्रदेश में आधुनिक उज्जैन ही है। दीपवंश के अनुसार इसका निर्माण अच्चुतगामी ने कराया था।

चीनी तीर्थयात्री युवान च्वांग के अनुसार इसकी परिधि 6.000 ली थी। यहां पर लगभग 300 भिशु हीनयानियों एवं महायानियों के सिद्धान्तों का अध्ययन कर रहे थे। यहाँ का राजा ब्राम्हण था जो विधर्मियों के ग्रन्थो में निष्णात् था किन्तु वह बौद्ध धर्म में विश्वास नहीं करता था। पेरिप्लस ऑव एरिथ्रियन सी (खण्ड, 48) नामक ग्रन्थ मे इस नगरी को ओजीनी कहा गया है जहाँ से प्रत्येक माल स्थानीय उपभोग के लिए वैरी गाजा (भृगुकच्छ) लाया जाता था। यह व्यापार का एक महान केन्द्र था जो कम से कम तीन प्रमुख व्यापारिक मार्गो से मिलन विंदु पर स्थित था।

मगध नरेश बिम्बिसार के उज्जयिनी की नगर वधु पदुमावती से एक पुत्र था। वहाँ के राजा चण्डपज्जोत के पुरोहित के कुल में महाकच्चापन (महाकात्यायन) उत्पन्न हुए थे जिन्होने तीनों वेदों का अध्ययन किया था एवं अपने पिता के उस पद के उत्तराधिकारी हुए। चौथी शती ई0 पू0 में उज्जयिनी मगध को अधीन हो गई थी। तीसरी शती ई0पू0 के प्रारम्भ में अशोक यहां का कुमारामात्य नियुक्त हुआ था। ज बवह यहां का कुमारामात्य था, यहीं पर उसका पुत्र महेन्द्र उत्पन्न हुआ थाा। उज्जयिनी के सुविख्यात राजा विक्रमादित्य ने, जिसकी पहचान सामान्यतया चन्द्रगुप्त द्वितीय से की जाती है, इस क्षेत्र पर अपना अधिकार स्थापित किया था।

उदयगिरि (म0प्र0)

बेसनगर या प्राचीन विदिशा (भूतपूर्व ग्वालियर रियासत) के निकट उदयगिरि विदशा नगरी ही का उपनगर था। यह एक सुनसान बालुकाश्म–पहाडी में उत्खनित गुहा मंदिर के लिए विश्रुत है। चन्द्रगुप्त द्वितीय के उदयगिरि गुहालेख में इस सुप्रसिद्ध पहाडी का वर्णन है। जिसके पूर्व की ओर मध्यप्रदेश मे रायसेन जिले में विदिशा तहसील के मुख्यावास भिलसा से लगभग दो मील पश्चिमोत्तर में स्थित इसी नाम के एक छोटे से गांव का उल्लेख है। कुछ लोगों के अनुसार यहां पहाडी भिलासा रेंलवे स्टेशन से 4 मील पश्चिमोत्तर में स्थित है। यह प्राचीन स्थल भिलसा से चार मील दूर वेताब एवं वेश नदियों के बीच स्थित है। यहां पर 20 गुफाएं हैं। यह क्षेंत्र जिसमें वह पहाडी स्थित है, प्राचीनकाल में प्राचीन बौद्ध आगम में दशार्ण या दसण्ण के नाम से विश्रुत है। दस्सण्ण को साधारतया आधुनिक भिलसा के परिवर्ती क्षेत्रों में समीकृत किया जाता है। उदयगिरि पहाडी लगभग डेढ मील लम्बी है और इसकी सामान्य दिशा दक्षिण–पश्चिम में पूर्वोत्तर की ओर है। वेदिसगिरि, जहां अशोक का पुत्र महेन्द्र सिंहण प्रस्थान करने के पूर्व अपनी मां के साथ एक बौद्ध विहार में रूका था। सम्भवतः वह उदयगिरि पहाडी ही हो सकती है। उदयगिरि गुहा में बारह अभिलेख हैं जिसमें से कुछ अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं

कुररघर पर्वत (अवन्ती–म0प्र0)

यह अवन्ती में था। किसी समय यहां पर महाकाच्चायन करते थे। काली नामक एक नारी उपासिका शिष्या उनके पास आई थी और उनसे एक सुत्त का सविस्तार अर्थ निरूपण करने को कहा। उन्होने अर्थ व्यवस्था करके उसको संतुष्ट किया था।

खजुराहों–खजराहों (जिला छतरपुर, म0प्र0)

प्राचीनकाल में खजुराहों जुझौति या बुदेलखंण्ड का मुख्य नगर था। झासी (उ0प्र0) से लगभग 100 मील दक्षिण–पूर्व में यह मध्य प्रदेश के छतरपुर जिले में स्थित है। चीनी तीर्थयात्राी युवान चुवांड् ने इस स्थल का उल्लेख किया है। वह कहता है कि इस गांव में अनेक बौद्ध विहार एवं लगभ 10 मंदिर थे। यहां पर बुद्ध की एक भीमकाय प्रतिमा है। जिस पर सातवीं या आठवी शती ई0 की लिपि में लोकधाम्म एत्कीर्ण है। कनिंधम के मतानुार गंठई नामक मंदिर बौद्ध धर्म से संबन्धित है। वस्तु और मूर्तिकला की दृष्टि से खजुराहों के मंदिरों को भारत की सर्वोत्कृष्ट कलाकृतियों में स्थान दिया गया है।

खोजदिया भोप (म9प्र0)

यह गांव मंदसोर जिले में हैं जहाँ पर अनेक बौद्ध गुफाएँ उपलब्ध हुई थी। पूर्व मध्यकालीन इमारतों के अवशेषों के लिए यह स्थान उल्लेखनीय है। बौद्ध मंदिरों के अवशेषों से 7 वीं– 9वीं शताब्दी में बौद्ध धर्म के ह्रास की स्पष्ट सूचना मिलती है।

गुजरा ं (जिला दतिया, म0प्र0)

1924 में इस स्थान से अशोक का एक शिलाभिलेख प्राप्त हुआ था जो बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। अशोक के तब तक प्राप्त अभिलेखों या धर्मलिपियों में केवल मासकी के अभिलेख में ही अशोक का नाम 'देवानांप्रिय' की उपाधि के साथ मिला था। शेष में सर्वत्र केवल' 'देवानाप्रियदर्शी' की उपाधि का ही उल्लेख है, नाम का नहीं। गुजर्रा में प्राप्त नए अभिलेख में जो बैराट, सहसराम, रूपानाथ, यरागुडी, राजुलमंडगिरि और ब्रम्हगिरि तथा नासकी के अभिलेख की ही एक प्रति हैं, अशोक का नाम उपाधि साहित दिया हुआ है– 'देवाना पियस पियदसिनों अशोक राजस।' इस प्रति के प्राप्त होने से इस अभिलेख के कई संशयग्रस्त पाठ स्पष्ट हो गए हैं। इसका मुख विषय है। अशोक के 256 दिन की धर्मयात्रा तथा बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए उसका अनथक प्रयास। जिस चट्टान पर यह लेख अंकित है वह गुजर्रा के निकट एक वन में अवस्थित है।

गोमर्द (म0प्र0)

पालि ग्रन्थ सुत्तनिपात के अनुसार इस नगर की स्थिति विदिशा तथा उज्जयिनी के मार्ग के बीच में थी। गोनर्द को शुंगकाल के पतंजति का जन्म स्थान माना जाता है। ये योगदर्शन तथा पणिनि के व्याकरण के महाभाष्म के रचयिता थे। जान पडता है कि गोनर्द की स्थिति भोपाल के निकट थी।

गोपालपुर (जिला जबलपुर, म0प्र0)

त्रिपुरी या वर्तमान तेवर के समीप इस स्थान पर कलचुरिकालीन विस्तृत खंडहर हैं। इनमें अनेक बौद्ध प्रतिमाएं प्राप्त हुई है। जिनमें अवलोकितेश्वर, बोधिसत्व और तारा की मूर्तियां उल्लेखनीय हैं। अवलोतिेश्वर की मूर्ति मगध शैली में निर्मित

है और इस पर 11वीं शती की मागधी लिपि में बौद्धों का मूलमंत्र 'यो धम्मा हेतुप्पभवा तेसं तथागतो आहं' अंकित है। ऐसा जान पडता है कि इस स्थान पर मध्यकाल में भी बौद्धों का केन्द्र था।

ग्यारसपुर (जिला भीलसा, म0प्र0)

मध्ययुगीन वास्तु अवशेषों से वह स्थान भरा पड़ा है। ग्राम के चतुर्दिक विस्तृत खंडहर फैले हुए हैं। यहां अन्य संप्रदायों के अतिरिक्त बौद्ध संप्रदाय से संबधित अवशेष यहां मिलते हैं जिनमें से बौद्धध्स्तुप आदि।

ग्वारीघाट (जिला जबलपुर, म0प्र0)

ज्बलपुर के निकटतम इस ग्राम के प्राचीन खंडहरों में पुरातत्व की प्रचुर एवं महत्वपूर्ण सामग्री बिखरी पडी है। जिसकों अभी तक प्रकाश में नहीं लाया गया है।

जुझौति (बुंदेलखंण्ड, म0प्र0)

ब्ंदेलखंण्ड का प्राचीन नाम जिसका शुद्ध रूप यजुर्होति कहा जाता है यह नाम 7वीं शती में भी प्रचलित था क्योंकि चीनी यात्री युवान–च्वॉड् जो भरत में 630 ई0 से 645 ई0 तक था, उज्जैन से महेश्वरपुर जाते हुए जुझौति पहुंचा था और उसने इ प्रदेश को इसी नाम से उल्लेख किया है। इसके लेख के अनुसार जुझौति का राजा ब्राम्हण था और वह बौद्धों का आदर करता था। बुदिलखंण्ड को ही पहले जुझौति ही कहते थे।

तुंबवन (परगना अशोकनगर, जिला गुना, म0प्र0)

इसकी पहचान तुकनेरी रेलवे स्टेशन से 6 मील दक्षिण में और एरण (प्राचीन एरिकिण) से लगभग 50 मील मश्चिमोत्तर में तुमैन से की जाती है साथ ही अशोक नगर रेलवे स्टेशन से पांच मील पर स्थित तुमैन गुप्तकाल के अभिलेखों में वर्णित तुंबवन है। गुप्तकाल में यह स्थान एरण प्रदेश में सम्मिलित था। यहां से गुप्त संवत् 116–(435 ई0) का कुमारगुप्त के समय का एक अभिलेख प्राप्त हुआ था जिसका संबन्ध गोविदगुप्त नामक व्यक्ति से है। सांची के महान बौद्ध स्तूप के 6 पूजा–अभिलेखों में तथा कुमार गुप्त और घटोत्कच गुप्त के तुमैनअभिलेख में इसका वर्णन है।

तुरतुरिया (जिला रायपुर, म0प्र0)

सिरपुर से 15 मील घोर वनप्रदेश के अन्तर्गत स्थित है। यहाँ अनेक बौद्धकालीन खंडहर है जिनका अनुसंधान अभी तक नहीं हुआ हैं। भगवान बुद्ध की एक प्राचीन भव्य मूर्ति जो वहां स्थित हैं। पूर्वकाल में यहां बौद्ध भिक्षुणियों का भी निवास था। इस स्थान पर एक झरने का पानी 'तुरतुर' की ध्वनि से बहता है जिससे इस स्थान का नाम ही तुरतुरिया पड गया है। इस स्थान का प्राचीन नाम अज्ञात है।

संदर्भ –

1.(बरूआ, अशोक एडं हिज इंस्क्रिप्शंस, अध्याय 3)

2.(बुदिष्ट इंडिया, पृ0 28)।

3.(रैप्सन,ऐश्चेंट, पृ0 175)।

4.(साम्स ऑव द ब्रेदेरन, पृ0 107, सं0 1)

5.(बुद्धिधस्ट इंडिया, पृ0 28)

6.(इलिवट, हिंदुइश्य ऐंड बुद्धिश्म 1, 282)।

7.(का0इं0इं0 जिल्द–3)

8.(दे0रा0 भंडारकर द्वारा पुनरावृत्त इंस्क्रिप्शंस ऑव नार्दन इंण्डिय न0 300 विक्रम सं0 1215)।